VOL- VIII ISSUE- VI JUNE 2021 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 7.149 ISSN 2349-638x

कविता 21 वीं शताब्दी की

डॉ व्ही.सी ठाकुर

एक और उत्तर आधुनिकता का बोलबाला है तो दूसरी ओर हम रूढ़ियों एवं गूढताओं से चिपटे हुए हैं। ऐसे लगता है कि मनुष्य बुद्धि से वैश्विक तो कर्म से रूढ़ीवादी बन गया है। हर चीजों में रंग बदलता नजर आ रहा है लेकिन रूढ़ियों का रंग बदलना जरूरी नहीं समझा जा रहा है। फौजी दृष्टि, कविताओं के माध्यम से बहुत कुछ कह जाती है। एक तरह से देखा जाए तो वह कविता के रेटारिक को बदल रहे हैं। वे कविता को माननीय सरोकारों से जोड़ते हैं।

"कल दिन ढला तो अंधेरे को स्वीकृति मिल गई
सड़क पर खून की कुछ बूंदे गिरी और
खोजी कुत्तों को सूंघने का नया काम मिल गया
सरकती हुई अस्तिनो से अजीब सा निकला कुछ
लोगों का खून होता आज सामान्य सी बात है।"

(अफसोस पृष्ठ. 63)

अपनी शती की और हम कई संभावनाओं, आशंकाओं और प्रश्नों से देख रहे हैं। यह प्रश्न विज्ञान, विचार, राजनीति, अर्थशास्त्र, जाति, धर्म, पर्यावरण, सूचना प्रौद्योगिकी कला संस्कृति हमारी मिट्टी हमारी जनता से जुड़े हैं और यह सभी चीजें साहित्य से जुड़ी है क्योंकि इन्हीं सब तत्व और उपादानों से साहित्य अपना कक्ष और प्राणवायु ग्रहण करता है।

आज वैश्वीकरण के युग में आर्थिक और मानसिक रूप से पूरी तरह हम गुलामी की ओर बढ़ रहे हैं। हम अपनी संस्कृति को भूल कर अपनी पहचान खोते जा रहे हैं। आज व्यक्तित्व अपने देश की तुलना में विदेशी चीजें अधिक आकर्षित कर रही है आधुनिक समय के साथ दौड़ते–दौड़ते हम अपने बुनियादी एवं पुरातन मूल्यों को पीछे छोड़ते जा रहे हैं।

" खूबसूरत घरों में नहीं रहते,
पीतल के लोटे,
कासे के कटोरे,
मिट्टी के घड़े, खील बताशे
कहां नहीं रहती गंगाजल की बोतल/
गीता, रामायण/ राधा – कृष्णा – शिव के
कैलेंडर.. /
खूबसूरत घरों में उगे रहते हैं तमाम तरह के
विदेशी फूल/ खूबसूरत घरों में नहीं उठता तुलसी
का पौधा

(समकालीन हिंदी कविता के बदलते सरोकार)–
डॉ राधा वर्मा पृष्ठ.25

वर्तमान समय अनेक चुनौतियों और संघर्षों का समय है। आज प्राकृतिक वातावरण अनेक कारणों से दूषित हो गया है। प्राकृतिक संपत्ति से खिलवाड़ औद्योगिकरण का बढ़ते जाना जनसंख्या में बढ़ोतरी, गांव का मिटना, शहरीकरण के कारण तेजी से कंक्रीट के जंगल बढ़ते जाना आदि पर्यावरण की असुरक्षा, जंगलों का विनाश आज आनेको देश प्राकृतिक संकटों से जूझ रहे हैं।

जैसे–

" क्या तुमने कभी सुना है।....
सपनों में चमकती कुलाड़ियों के भय से पेड़ों की
चित्कार सुना है कभी
रात के सन्नाटे में अंधेरे में मुंह ढाप
किस कदर रोती है नदियां?
हथौड़े की चोट से टूट कर बिखरते
पत्थरों की चीज...?
अगर नहीं तो क्षमा करना
तुझे तुम्हारे आदमी होने पर संदेह है ।

(21वीं सदी की कविता संवेदना के नए स्तर– सं.डॉ.शैलजा भारद्वाज पृष्ठ.106–107)

एक और मानवीय दबाव को कवि अलग–अलग संदर्भ में अनुरक्त करने लगा है। भाषा चाहे मौन हो या सांकेतिक या चिन्ह आधारित या चित्र आधारित उसका कुछ ना कुछ अर्थ होता है। कभी इन सभी भावों को बड़ी कुशलता के साथ कविता में सृजन करता है–

"संवाद हीनता की भी अपनी भाषा होती है, संवादहीन भाषा के होते हैं अपने नियम, जिन से गुजर कर ही बोलती है भाषा, प्रेम करने की और दोस्ती करने की और साथ रहने की भाषा सीखना आसान नहीं, इसके लिए जरूरी है, प्रेम करने की... ... इच्छा का होना, और इनसे भी जरूरी है जिंदगी में इन सब की जरूरत का होना।"(भाषा, जरूरत और आदमी की कहानी पृष्ठ. 95, 96)

हिंदी में एक कविता बहुत चर्चित हुई थी। कविता थी' प्रेम पत्र' जिसे बद्रीनारायण ने लिखा था। संयोग देखिए उसी दौर में सुभाष घई की एक फिल्म का एक गीत भी खूब चर्चित हुआ था। गीत था 'इलू इलू'। यह गीत मनीषा कोइराला और विवेक मुरारन पर फिल्माया गया था। यह वही समय था जब नई आर्थिक नीतियां भारतीय व्यवस्था में दाखिल हो रही थी बाजार से लाइसेंस राज का खात्मा हो रहा था। हर व्यक्ति अपने – अपने हुनर से संसार को परिवर्तित कर रहा है। उस कार्य दक्षता की ओंठो द्वारा गा भी रहा हैं। " इस चर्चा से बेखबर वह चाय बना रहा है और होठों को गोलकर सीटी बजाते हुए महकती चाय का गीत गा रहा है...(महकती चाय का गीतःपृष्ठ, 93) ऐसी चमकीली काव्य भाषा ताजा खबरों को कविता बनाती है। इसीलिए उनकी कविता में अर्थ की सघनता बराबर दृष्टिगोचर होती है।

हिंदी क्षेत्र में नवजागरण की शुरुआत भारतेंदु और उनके साथी साहित्यकारों से मानी जाती है। भारतेंदु के काल में हिंदी गद्य का भी विकास हुआ। भारतेंदु ब्रज भाषा में कविताएं लिखते थे, लेकिन उन्हीं के समय में यह जरूरत महसूस की गई कि कविताएं भी खड़ी बोली में लिखी जाएं। भले ही खड़ी बोली में कविता का कोई गंभीर प्रयास उनके यहां लक्ष्य नहीं किया गया, लेकिन वरिष्ठ कवि सुरेश सलिल के संपादन में जो 'कविता सदी' का प्रकाशन हुआ है, उसमें उन्हीं की कविता से शुरुआत की गई है और तब से लेकर मौजूदा दौर की प्रमुख कवयित्री सविता सिंह तक के लगभग सभी प्रतिनिधि कवियों को इसमें समेटने का प्रयास किया गया है। विशाल संचयन को पढ़ने से हिंदी कविता के विभिन्न आंदोलनों, प्रवृत्तियों, शैलियों और पडाओं का पता चलता है। नागार्जुन की भी कविताओं को इसमें रखा गया है, जो गेयात्मक या छंदबद्ध है। इसमें नवजागरण से लेकर छायावाद, प्रगतिशील काव्य प्रयोगवाद और नई कविता दौर की विशिष्ट कविताएं एक साथ पढ़ी जा सकती है। हिंदी में आधुनिक बौद्धिक संवेदना का सूत्रपात करने वाले रचनाकारों में अज्ञेय का नाम शीर्ष पर है। परंपरा, आधुनिकता, प्रयोग–प्रगति, काव्य, सत्य, कवि का सामाजिक दायित्व, काव्य शिल्प, काव्य भाषा, छंद को

मौलिक स्वरूप दिया है। रचनाकार भी समाज का एक व्यक्ति होने के कारण अपनी रचनाओं के माध्यम से वह युगीन परिस्थितियों को भी उजागर करता है। देवेश ठाकुर(2013) का चिंतन है कि " वैसे तो प्रयोग सभी कार्यों में होते रहे हैं और प्रयोगों की प्रवृत्ति शाश्वत है। क्योंकि इसमें प्राचीन तथा पूर्ववर्ती कविता की तरह रागात्मक अनुभूति के मूल है। कल्पना की कोमल दलों के फूल हैं। विचारों की ऊंची बेल का चढ़ाव है। तथा अभिव्यंजना माधुर्य का मादक सौंदर्य नई कविता स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत लाक्षणिक एवं प्रतीकात्मक शैली में लिखी गई है। जिसमें वयक्तिकता तथा विचारात्मकता का प्राधान्य है। आज कविता का सरोकार वैश्विक हो गया है।

संदर्भ –

1. वागर्थ पत्रिका–दिसंबर–2009,पृष्ठ.70
2. 21वीं सदी की कविता–संवेदना की नए स्तर–सं.डॉ.शैलजा भारद्वाज पृष्ठ.106–107
3. भाषा जरूरत और आदमी की कहानी(पृष्ठ. 95–96)
4. अनलिखी कविताओं में–पृष्ठ.127
5. अलाप में गिरह–राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com